सहजानंद शास्त्रमाला

पञ्चसूत्री द्वादशी

रचयिता

अध्यात्मयोगी, न्यायतीर्थ, सिद्धान्तन्यायसाहित्यशास्त्री

पूज्य श्री क्षु० मनोहरजी वर्णी "सहजानन्द" महाराज

प्रकाशक

श्री सहजानंद शास्त्रमाला, मेरठ

एवं

श्री माणकचंद हीरालाल दिगम्बर जैन पारमार्थिक न्यास

गांधीनगर, इन्दौर

Online Version : 001

http://sahjanandvarnishastra.org/

पञ्चसूत्री द्वादशी

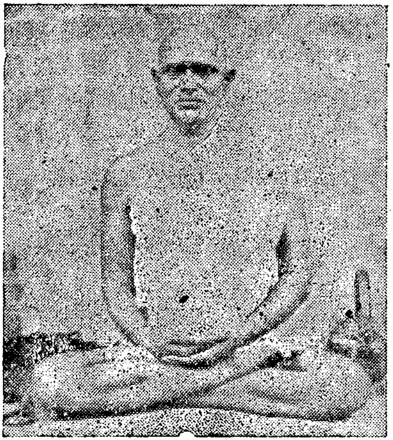

लेखक—

अध्यात्मयोगी न्यायतीर्थ सिद्धान्तन्यायसाहित्यशास्त्री
गुरुवर्य्य पूज्य श्री मनोहर जी वर्णी सहजानन्द महाराज

प्रकाशकः—
सुमेरचन्द जैन, प्रधान मंत्री
भारतवर्षीय वर्णी जैन साहित्यमंदिर
प्रेमपुरी, मुजफ्फरनगर (उ० प्र०)

न्यौछावर—२० पैसे

Report any errors at vikasnd@gmail.com

आत्म-कीर्तन

अध्यात्मयोगी न्यायतीर्थ सिद्धान्तन्यायसाहित्यशास्त्री शान्तमूर्ति
पूज्य श्री मनोहरजी वर्णी "सहजानन्द" महाराज द्वारा रचित

हूँ स्वतन्त्र निश्चल निष्काम । ज्ञाता द्रष्टा आतमराम ।। टेक ।।

मैं वह हूँ जो हैं भगवान, जो मैं हूँ वह हैं भगवान ।
अन्तर यही ऊपरी जान, वे विराग यह राग वितान ।।१।।

मम स्वरूप है सिद्ध समान, अमित शक्ति सुख ज्ञान निधान ।
किन्तु आशवश खोया ज्ञान, बना भिखारी निपट अजान ।।२।।

सुख दुख दाता कोइ न आन, मोह राग रुष दुःख की खान ।
निजको निज परको पर जान, फिर दुखका नहिं लेश निदान ।।३।।

जिन शिव ईश्वर ब्रह्मा राम, विष्णु बुद्ध हरि जिसके नाम ।
राग त्यागि पहुँचूँ निज धाम, आकुलताका फिर क्या काम ।।४।।

होता स्वयं जगत परिणाम, मैं जगका करता क्या काम ।
दूर हटो परकृत परिणाम, 'सहजानन्द' रहूँ अभिराम ।।५।।

(नोटः—शास्त्र प्रवचन, सामायिक, समारोह, विद्यालय, प्रार्थना आदिके समय सामूहिक रूपमें बोलिये । तथा किसी विपत्तिके समय शान्त्यर्थ किसी अर्ध चौथाई या पूर्ण छन्दका पाठ मनन कीजिये)

http://www.jainkosh.org

(१)

१– मैं देहसे निराला, अमूर्त ज्ञानमात्र हूं ।

२– मैं ज्ञानको ही करता हूं व ज्ञानको ही भोगता हूं ।

३– ज्ञानका भी करना भोगना क्या ?
जानन परिणमन होता रहता है ।

४– परमार्थतः मैं अविकार ज्ञानस्वभाव हूं ।

५– हे अविकार ज्ञानस्वभाव ! प्रसन्न होओ और जन्म-मरणका संकट दूर करो ।

ॐ शुद्धं चिदस्मि

卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

(२)

१– सर्वविशुद्ध ज्ञानमात्र मुझमें किसी अन्यका प्रवेश ही नहीं, अतः मैं निर्भार हूं।

२– जब मुझमें किसी अन्यका प्रवेश ही नहीं, तब मेरा किसी अन्यसे रंच भी संबंध नहीं, मेरा तो मेरा ज्ञानघन आत्मा ही सर्वस्व है।

३– जब मेरा किसी अन्यसे रंच भी संबंध नहीं, तब मैं व्यर्थ अनर्थ मिथ्या विकल्पोंको करके क्यों बरबाद होऊँ।

४– मुझे मेरा विकल्पोंके रूपमें अनुभव मत होओ, कर्मविपाकके रूपमें अनुभव मत होओ।

५– मुझे मेरा अनुभव ज्ञानाकाररूपमें ही होओ, निर्विकल्प ज्ञायक भाव ही मेरे अनुभवमें रहो।

ॐ शुद्धं चिदस्मि

卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐

(३)

१– अज्ञानसे पूर्वबद्ध, पृथ्वीपिण्डसमान कर्मोंके निषेक जब उदयागत होते हैं तब उनका उन्हींमें विस्फोट परिणमन होता है।

२– उदयागत, विस्फुटित कर्म मुझ ज्ञानज्योतिर्मय आत्मामें तामसरूपसे प्रतिबिम्बित होते ही ज्ञानस्वच्छता तिरोहित हो जाती है।

३– ज्ञानस्वच्छता तिरोहित हो जानेसे उपयोग स्वभावसे च्युत होकर प्रतिभासित कर्मविपाकको आत्मरूपसे ही मानने लगता है।

४– कर्मविपाकको आत्मरूपसे मानते ही आश्रयभूत बाह्य पदार्थको विषय करके विकारकी व्यक्त मुद्रा बनती है।

५– कर्मविपाक भिन्नप्रदेशी है उससे मैं अत्यन्त भिन्न हूं, प्रतिभासस्वरूप हूं। मुझमें संकटका काम ही नहीं।

ॐ शुद्धं चिदस्मि

卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐

Report any errors at vikasnd@gmail.com

(४)

१– मेरे उपयोगमें ज्ञानाकार ही रहे ताकि कर्मविपाक झलक भी न दे सके।

२– कर्मविपाक झलक भी जाय तो भी वह पर द्रव्य है उससे मुझ ज्ञानज्योतिर्मय ब्रह्मका क्या वास्ता।

३– भिन्न ज्ञेय कर्मविपाककी कल्मषता भी बने, तो वह बाह्य वस्तु विषय हुए बिना मुद्राशून्य अबुद्धिपूर्वक होकर खिर जावे।

४– कर्मविपाक बुद्धिगत भी हो तो भी वह बाहर ही बाहर लोट कर निकल जावे, वह तो बरबाद करनेके लिये आता है उससे मुझे कोई ममत्व नहीं

५– मैं तो ज्ञानस्वच्छतामात्र हूं, पूर्वदोषसे बद्ध कर्मोंका विपाक भी झलके तो झलको, ज्ञानस्वच्छता है सो झलकेगा, किन्तु अब मैं ज्ञानस्वच्छताके विवेक पर टिका ही रहूंगा।

ॐ शुद्धं चिदस्मि

卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐

http://www.jainkosh.org

(५)

१– मैं ज्ञानमात्र हूं, उपयोगमात्र हूं, इसमें झंझट क्या, इसमें संकट क्या ?

२– ज्ञानका ही सर्वदशाओंमें परिणमन है, सुख भी ज्ञानके परिणमनकी एक मुद्रा है, दुख भी ज्ञानके परिणमन की एक मुद्रा है, सुख दुखसे रहित विशुद्ध आनन्द भी ज्ञान के परिण मनकी एक मुद्रा है।

३– ज्ञानका ही सर्वदशाओंमें परिणमन है, विपरीत श्रद्धान भी ज्ञानके परिणमनकी एक मुद्रा है, शुद्ध श्रद्धान भी ज्ञानके परिणमनकी एक मुद्रा है, रागद्वेष परिणमन भी ज्ञानके परिणमनकी एक मुद्रा है, वीतराग परिणमन भी ज्ञानके परिणमनकी एक मुद्रा है।

४– ज्ञान ज्ञानस्वरूपके उपयोगमें न रहकर बाह्य विकल्प किया करे यह भी ज्ञानके परिणमनकी एक मुद्रा है और ज्ञान ज्ञानस्वरूपके उपयोगमें रहकर निर्विकल्प रहे, निराकुल रहे वह भी ज्ञानके परिणमनकी एक मुद्रा है।

५– मेरे ज्ञानका सहज ही, बिना बनावट, जो परिणमन हो वही मेरा सत्य है, वही मेरा कल्याण है।

ॐ शुद्धं चिदस्मि

卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

(६)

१– मैं ज्ञानस्वरूप हूँ। ज्ञान अज्ञानरूप कभी नहीं होता, अज्ञानरूपमें अपना स्वरूप स्वीकार करने वाला ज्ञान ही अज्ञानरूप कहलाता है।

३– कर्मविपाक सब अज्ञानरूप हैं, अज्ञानमय कर्मविपाक परिणाम पौद्गलिक कर्मोंमें रहो। मैं ज्ञानस्वरूप हूं, मैं अपने ज्ञानस्वरूपमें ही रहूंगा।

३– मुझमें कर्मविपाक भी झलक गया तो झलक जाओ मेरेमें सारे विश्वको झलकानेकी योग्यता है, हाँ झलक ने से 'आगेकी उद्दण्डता तो मेरी हो सकती है, कर्म विपाकका काम तो कर्ममें ही परिसमाप्त है। मैं बरबाद होने की उद्दण्डता क्यों करूँ, मैं तो ज्ञानस्वरूप उपयुक्त होनेकी ही वृत्ति रखूँगा।

४– मुझ ज्ञानमें जो प्रतिभासित निज परिणाम है वह भी मेरा नहीं, सो वह भी मेरा काम नहीं। मैं तो प्रति-भासस्वरूप हूं, ज्ञानाकार स्वच्छतामात्र हूं यही वृत्ति रहा करे यही मेरा काम है, जो कि अगुरुलघुगुणके निमित्त से होने वाला अन्तः परिणमनरूप मेरा अर्थपर्याय है।

५– मैं सर्वविशुद्ध ज्ञानघन अन्तस्तत्त्व हूं, कृतकृत्य हूं, परि-पूर्ण हूं, स्वयं असीम सहज आनन्दमय हूं।

ॐ शुद्धं चिदस्मि

卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐

(७)

१– मेरेमें कष्टका क्या काम, मेरा तो आनन्द स्वभाव है।

२– जो भी विवशता व आकुलता अनुभवमें आती है उसका कारण किसी न किसी बाह्य वस्तुमें इच्छा होना है।

३– धन, यश व इन्द्रियविषय इनकी इच्छा न हो तो कष्ट का फिर कोई भी स्रोत नहीं रहता।

४– आत्मन्! कोई कष्ट मत उठाओ, सत्य ज्ञान जागृत करो और अपनेको ज्ञानमात्र एवं निर्भार अनुभव करो।

५– मैं सहजसिद्ध, ज्ञानघन, आनन्दस्वरूप, निरञ्जन, पावन चिज्ज्योति हूं।

ॐ शुद्धं चिदस्मि

卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐

Report any errors at vikasnd@gmail.com

(८)

१– प्रभो ! आत्मन् ! दुःख मानते हुए, विकल्प करते हुए में तुम्हें कुछ लाज नहीं आती ?

२– कहाँ तो तेरा पवित्र ज्ञानानन्दस्वभाव और कहाँ यह वर्तमान कायरता।

३– प्रिय– आत्मन् ! अपने स्वभावकी ओर आनेका साहस बना, जगतमें चेतन या अचेतन पदार्थ कुछ भी तेरा सहाय नहीं है।

४– मेरा देव, मेरा गुरु, मेरा हितू, मेरा रक्षक, मेरा शरण मात्र निज चैतन्यस्वभावकी उपासना है।

५– मैं दिव्य तेजोमय, स्वयंबुद्ध, कल्याणमय, स्वयं सुरक्षित सहज शरणभूत सर्वविशुद्ध चैतन्यस्वरूप हूं।

ॐ शुद्धं चिदस्मि।

卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐

http://www.jainkosh.org

(९)

१– सबसे दृष्टि मोड़कर अपनी ओर प्रवेश कर परिपूर्ण स्वतन्त्र ज्ञानस्वरूप अनुभवूं यही वास्तविक वीरता है।

२– किसी भी पर पदार्थको विषय बना कर आकुलता करूं यह कायरता है।

३– किसीका कोई अन्य साथी नहीं और कायरका तो साथी ही क्या हो कोई, उसकी तो लोग मजाक उड़ाते हैं। कायर बननेमें किसी भी प्रकारका लाभ नहीं।

४– मैं सबसे निराला, अपनेमें पूर्ण, अपने ही उत्पाद व्यय ध्रौव्यको रखने वाला स्वयं सुरक्षित हूं।

५– ज्ञानानन्दसे भरपूर, परमात्मत्वसम्पन्न मुझमें यह मैं परसे सदा अबाधित हूं।

ॐ शुद्धं चिदस्मि

卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

(१०)

१– बाहर किसीका कुछ भी परिणामो, उससे मुझे क्या ?

२– मेरा तो मेरे विशुद्ध चैतन्यस्वरूपसे अतिरिक्त कुछ भी नहीं है।

३– मेरा बिगाड़ किसी भी अन्य वस्तुसे नहीं, मैं ही अपने स्वरूपसे चिगकर अपनेको विविध कल्पनारूप अनुभवता हुआ कष्ट पाता हूं।

४– जैसा मेरा सहज स्वरूप है, विशुद्ध चैतन्यधातु है उसी रूप अनुभवूं, फिर कष्टका निशान भी नहीं।

५– मैं चित्प्रकाशमात्र, निर्लेप, निराला, अवाधित शुद्ध अन्तस्तत्त्व हूं।

ॐ शुद्धं चिदस्मि

卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐

(११)

१– मैं ज्ञानमात्र हूं, मुझमें किसी अन्यका प्रवेश नहीं, अतः निर्भार (भाररहित) हूं।

२– मैं ज्ञानघन हूं, मुझमें कोई अपूर्णता नहीं, अतः कृतार्थ हूं।

३– मैं ज्ञानस्वभाव हूं, स्वभाव कभी भी किसीके द्वारा दूर नहीं किया जा सकता, अतः मैं केवल निश्चल ज्ञायक हूं।

४– मैं ज्ञानपुञ्ज हूं, मनुष्य भी नहीं हूं, अतः मुझे लोकेषणा व लोकव्यवहारसे कोई प्रयोजन नहीं।

५– मैं ज्ञानस्वरूप हूं, मेरा परिणमन ज्ञानरूप ही होता है, मैं कल्पनामें ही अज्ञानरूप बनकर आकुलित होता हूं। मेरा ज्ञानस्वरूप मेरी दृष्टिमें रहो, मेरा अज्ञानरूप परिणाम मत होओ मेरा ज्ञानरूप परिणाम ही होओ।

ॐ शुद्धं चिदस्मि

卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐

Report any errors at vikasnd@gmail.com

(१२)

१– मैं सहज ज्ञानस्वरूप हूं, मुझमें जाननेकी वृत्ति सहज होती रहती है और जो जानना सहज होता है बस वही मात्र मेरा कार्य है ।

२– जिसे लोकमें जानना माना जा रहा है वह तो विकार है, विकार आकुलताका उत्पादक है, विकार मत होओ, अर्थात् ऐसा यह जानना ही सारा बंद हो जाओ ।

३– मैं सहज आनन्दस्वरूप हूं, मेरेमें तो स्वरूपत: सहज चेतनेका ही काम है उसमें आकुलताका नाम निशान भी नहीं है ।

४– जिसे लोकमें आनन्द माना जा रहा है वह तो आनन्द का विकार है, विकार आकुलतारूप है, विकार मत होओ अर्थात्, यह सुखपरिणाम मत होओ ।

५– सहज संचेतनमें ही विशुद्ध ज्ञान है और विशुद्ध आनन्द है । मैं सहज चैतन्य स्वरूप हूं, शुद्ध चैतन्यस्वरूप हूं ।

ॐ शुद्धं चिदस्मि

卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐

http://www.jainkosh.org

परमात्म–आरती

ॐ जय जय अविकारी ।

जय जय अविकारी, ॐ जय जय अविकारी
हितकारी भयहारी, शाश्वत स्वविहारी
ॐ जय जय अविकारी ।।

काम क्रोध मद लोभ न माया, समरससुखधारी
ध्यान तुम्हारा पावन, सकल क्लेशहारी ।।ॐ।।

हे स्वभावमय जिन तुम चीना, भव संतति टारी ।
तुव भूलत भव भटकत, सहत विपत भारी ।।ॐ।।

पर सम्बन्ध बन्ध दुखकारण, करत अहित भारी ।
परम ब्रह्मका दर्शन, चहुंगति दु:खहारी ।।ॐ।।

ज्ञानमूर्ति हे सत्य सनातन, मुनिमन-संचारी
निर्विकल्प शिवनायक, शुचिगुण-भंडारी ।।ॐ।।

बसो बसो हे सहजज्ञानघन, सहज शान्ति-चारी
टलें टलें सब पातक, परबल बलधारी ।।ॐ।।

卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

आध्यात्मिक ज्ञान विज्ञानका घर बैठे सरल साधनों से लाभ लें।

धर्म प्रेमी बन्धुओ ! आध्यात्मिक साधना प्रत्येक प्राणी करना चाहता है, प्रत्येक के मनमें अध्यात्म योग की जानकारीके लिए प्रेरणा उत्पन्न होती हैं, परन्तु इसकी जानकारी के लिए सरल साधन सदैव उपलब्ध नहीं रहते। अतः आत्माकी मांगको प्राणी दबा देता है।

यदि आप सरल उपायोंसे अध्यात्मिक ज्ञान, विज्ञान व शान्ति चाहते हैं तो अध्यात्म योगी न्याय तीर्थ पूज्य श्री मनोहर जी वर्णी सहजानन्द जी महाराज द्वारा रचित साहित्यका स्वाध्याय, मनन अवश्य कीजिए।

साहित्य मिलने के पते :—

१— खेमचंद जैन सर्राफ,
मंत्री: श्री सहजानन्द शास्त्रमाल
१८५ ए, रणजीतपुरी, सदर मेरठ (उ. प्र.)

२— सुमेरचन्द जैन,
प्रधान मंत्री: भारतवर्षीय वर्णी जैन साहित्य मंदिर
१५ प्रेमपुरी मुजफ्फरनगर

मुद्रक:—मैनेजर, जैन साहित्य प्रेस, १८५ ए, रणजीतपुरी, सदर मेरठ।

Report any errors at vikasnd@gmail.com